

Dr•Manoj Kumar Singh

Assistant Professor

P.G.Deptt.of Psychology

Maharaja College Ara

Date: 16/10/2025

Class: U.G Semester - 3rd

(MJC-3)

Developmental Psychology.

Topic - विकास की आवश्यकता एवं महत्व

(Need and Importance of Development)

बालक के जन्म से लेकर किशोरावस्था के अंत तक उनमें जैविक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते रहते हैं जिसके फलस्वरूप बालक के भावी जीवन की संरचना का एक बालक के जन्म से लेकर किशोरावस्था के अन्त तक उनमें जैविक एवं मनोवैज्ञानिक हो गया है। बाल विकास के अध्ययन से बालकों का कल्याण होता है साथ ही साथ खाका खिंच जाता है। वर्तमान समय में बाल विकास विषय का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया है। माता-पिता भी बालकों की आवश्यकताओं एवं विचारों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समझ सकते हैं। बाल विकास भी अन्य सामाजिक विज्ञानों की तरह एक स्वतन्त्र विज्ञान है। इसे सम्पूर्ण मानव विकास की एक इकाई के रूप में मान्यता प्रदान की गई है।

क्रो एवं क्रो के अनुसार, "व्यक्ति तथा समाज के कल्याण के क्षेत्र में रुचि रखने वाले मनोवैज्ञानिक, शिक्षक, अभिभावक, सामाजिक कार्यकर्ता बालकों के अध्ययन को महत्व देने लगे हैं। बालक भविष्य का पिता है, बालक के प्रथम छः वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं आदि लोकोक्तियों ने बाल विकास के अध्ययन के महत्व को बढ़ाया ही है।"

बाल विकास का महत्व निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है-

(1) व्यक्तिगत विभिन्नताओं की जानकारी प्राप्त होती है- बाल विकास का अध्ययन करके हम बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का पता लगा सकते हैं और उसी के अनुसार उनकी आगामी शिक्षा की व्यवस्था की जाती है जिसमें विकास की प्रक्रिया का एक निश्चित स्वरूप होता है। जैसे-मन्द बुद्धि बालक की अपेक्षा कुशाग्र बुद्धि के बालक जल्द सीखना शुरू कर देता है।

बाल पोषण विधियों का ज्ञान - बाल विकास के अध्ययन से माता-पिता अपनी मातृत्व एवं पितृत्व के दायित्व को अच्छे से समझ सकते हैं एवं उनका सफलतापूर्वक निर्वहन कर सकते हैं। बाल विकास के अध्ययन से माता-पिता को बालक के पोषण से सम्बन्धित सहायता प्राप्त हो जाती है।

(3) बालकों के प्रशिक्षण एवं शिक्षा में उपयोगी - बाल विकास के अध्ययन से ही इस बात का पता चलता है कि किस अवस्था में बालक की मानसिक योग्यता कितनी होती है? बालक की मानसिक योग्यता का पता लगाकर उसके प्रशिक्षण एवं शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। बालकों की मानसिक योग्यता को आधार मान कर ही उनके लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है।

(4) बालक के सम्पूर्ण विकास की अवस्थाओं का ज्ञान- बालक गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक किस प्रकार विकसित होता है, इसका ज्ञान माता-पिता बाल विकास के अध्ययन से ही प्राप्त कर सकते हैं एवं अपने शिशु के विकास की विभिन्न अवस्थाओं के विकास में उसका समुचित प्रयोग करके उसके विकास में योगदान दे सकते हैं।

(5) बालक के व्यवहार के नियन्त्रण करने में सहायक - बालक को समाज के अच्छे नागरिक के रूप में विकसित करना ही बाल विकास का प्रमुख उद्देश्य है। समाज बालक को तभी स्वीकारता है जब बालक का शारीरिक एवं मानसिक व्यवहार सामान्य होता है।

(6) बालक की विकासात्मक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त होता है-प्रत्येक बालक अपनी विकास प्रक्रिया में एक निश्चित आयु में एक गुण प्रदर्शित करता है। ये गुण उससे पूर्व या बाद की विकास अवस्थाओं में परिलक्षित नहीं होता है और यदि होता भी है तो सामान्य रूप में होता है विशिष्ट रूप में नहीं। इन्हीं परिलक्षित गुणों को विकासात्मक क्रियाएँ कहते हैं। जैसे-शिशु के जन्म से 3-4 माह में भाषा विकास होने लगता है। बाल-विकास की अवस्था का ज्ञान प्राप्त करके अभिभावक इन विकासात्मक क्रियाओं के आधार पर बालक के विकास का उचित निर्देशन दे सकते हैं।

विकास की अवस्थाएँ (Stages of Development)

मानव जीवन चक्र के प्रमुख चरण क्रमानुसार इस प्रकार हैं-

- (1) जन्मपूर्व अथवा गर्भकालीन अवस्था (Prenatal Stage)
- (2) शैशवावस्था एवं बचपनावस्था (Infancy and Toddlerhood)
- (3) प्रारम्भिक बाल्यावस्था (Pre Childhood)
- (4) उत्तर बाल्यावस्था (Middle or Late Childhood)
- (5) किशोरावस्था (Adolescence)
- (6) युवावस्था (Youth)
- (7) मध्य प्रौढ़ावस्था अथवा मध्यावस्था (Middle Adulthood)
- (8) उत्तर प्रौढ़ावस्था / वृद्धावस्था (Late Adulthood/Old Age)

1. जन्मपूर्व अथवा गर्भकालीन अवस्था (Prenatal Stage)

मानव विकास की प्रथम अवस्था जन्म के प्रथम दिन से आरम्भ नहीं होती बल्कि तब से आरम्भ होती है जब बालक माँ के गर्भाशय में गर्भधारण के बाद अस्तित्व में आता है। मानव का जैविक प्रारम्भ वह क्षण होता है जब एक शुक्राणु जो एक डिम्ब (अंडाणु) के साथ मिलता है, हजारों डिम्बों में से एक डिम्ब बनता है तो यह प्रक्रिया गर्भाधान कहलाती है। जब शुक्राणु और डिम्ब एकल कोशिका को उत्पन्न करने के लिए एक साथ मिलते हैं तो यह गुणमज अथवा युग्म (Zygote) कहलाता है। जन्मपूर्व अवस्था गर्भावधि का समय होता है। यह गर्भावधि समय लगभग 9 माह अथवा 280 दिन चलती है, युग्म कोशिका विभाजन के साथ बार-बार प्रतिवर्धित होता है। यह सर्वप्रथम भ्रूण में और उसके बाद गर्भस्थ शिशु में विकसित हो जाता है तथा अन्त में यह जटिल मानव के रूप में उत्पन्न होता है जिसमें लाखों कोशिकाएँ होती हैं जो मानव शरीर के विभिन्न कार्यों को करने में दक्ष होती हैं। गर्भकालीन अवस्था को तीन अवस्थाओं में विभाजित किया गया है। शुक्राणु से गर्भित डिम्ब से बीजावस्था आरम्भ होती है, यह एक सप्ताह तक चलती है। दूसरी अवस्था में भ्रूण पूर्ण हो जाता है। तीसरी अवस्था गर्भस्थ शिशु की अवस्था है। जन्मपूर्व अवस्था अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह जन्म लेने वाले मनुष्य की असंख्य

महत्वपूर्ण विशेषताओं का निर्धारण करती है। शुक्राणु और अंडाणु के मेल से जैविक वंशानुक्रम की उत्पत्ति होती है। ये गर्भ के अंदर और बाहर पर्यावरणीय प्रभावों के साथ अंतःक्रिया करते हैं।

प्रसव पूर्व विकास का उचित क्रम (Proper Order of Pre-delivery Development).

(1) अवस्था 1 भ्रूणीय / रोगाणु अवस्था (सप्ताह 1 से 2) - गर्भाधान से लेकर दो सप्ताह की अवधि को भ्रूणीय अवस्था कहा जाता है। गर्भधारण तब होता है जब एक शुक्राणु कोशिका एक अंड कोशिका निषेचित करता है और एक युग्मनज बनाता है।

(2) अवस्था 2- अपरिपक्व अवस्था (सप्ताह 3 से 8) अपरिपक्व अवस्था 3 से 8 सप्ताह तक रहती है। कोशिकाओं के विकासशील अंड को भ्रूण कहा जाता है। इस अवस्था में युग्मनज लगभग 7-10 दिनों तक विभाजित होने और 150 कोशिकाएं होने के बाद, यह फैलोपियन ट्यूब से नीचे चला जाता है और गर्भाशय की परत में स्वयं को प्रत्यारोपित कर लेता है। आरोपण के बाद, इस बहुकोशिकीय जीव को भ्रूण (Embryo) कहा जाता है। अब रक्त वाहिकाएं बढ़ती हैं, जिससे प्लेसेंटा बनता है।

(3) अवस्था 3- भ्रूण अवस्था (सप्ताह 9 से 38-40)- प्रसवपूर्व विकास का अंतिम चरण भ्रूण/अंडस्थ शिशु है, जो जन्म 9 सप्ताह से 38 या 40 सप्ताह तक रहता है। जब जीव लगभग नौ सप्ताह का हो जाता है, तो अपरिपक्व भ्रूण को भ्रूण (Fetus) कहा जाता है। इस स्तर पर, भ्रूण एक राजमा के आकार का होता है और जैसे-जैसे 'पूछ' गायब होने लगती है, वह एक इंसान का पहचानने योग्य रूप लेना शुरू कर देता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जन्मपूर्व विकास का उचित क्रम युग्मनज, अपरिपक्व भ्रूण एवं भ्रूण है।

2. शैशवावस्था एवं बचपनावस्था (Infancy and Toddlerhood)

शैशवावस्था एवं बचपनावस्था जन्म से लेकर 3 वर्ष तक की अवधि होती है। यह अवस्था तीव्र वृद्धि और विकास से भी सम्बन्धित है। सामान्यतः जन्म की प्रक्रिया तब आरम्भ होती है जब गर्भस्थ शिशु तैयार होता है। नवजात शिशु अवधि (Infant Period) हो बालक का प्रथम माह होता है। यह अवधि शिशु के लिए संक्रमण को अवधि बोती है। जन्म के समय शिशु का परिसंचरण, श्वसन, जठरांत्र एवं तापमान नियन्त्र तन्त्र माँ से अलग हो जाते हैं। नवजात शिशु निद्रा, जागरूक अवस्था और फिर के मध्य बारी-बारी से कार्य करते हैं। शिशु लगभग 20-22 घंटे सोते हैं और 3 वर्षों तक की अवस्था में यह देखा जाता है कि प्रथम वर्ष में शिशु का शरीर तेजी से बढ़ता है। स्तनपान कराने के बहुत अच्छे शारीरिक क्रियात्मक लाभ हैं और वह माँ और शिशु के मध्य अटूट सम्बन्ध में वृद्धि करता है। संवेदी क्षमताएँ जन्म से होती हैं और जीवन के पहले कुछ महीनों में तीव्रता से विकसित होती हैं। जीवन के तीन महीनों के दौरान, शिशु अपने शारीरिक संचालनों पर नियन्त्रण करना आरम्भ कर देता है। गामक कौशल का विकास होता है तथा शिशु स्व-चलन करने का भी प्रयास करता है। इस अवस्था में शारीरिक वृद्धि और विकास मन्द गति से होता है तथा शरीर-क्रियात्मक कार्यों का विकास तीव्र गति से होता है। पेशी नियन्त्रण सिर, बाजू और हाथ के कौशलों से आरम्भ होता है। इस अवधि में, भाषा विकास भी होने लगता है। प्राक-भाषा विज्ञान भाषण जो शब्दों से पहले होता है उसमें रोना, विलखना और नकल करने की आवाजें आदि सम्मिलित हैं। सामान्य तौर पर शिशु संकेतों का प्रयोग करते हैं। 10 महीने का शिशु सार्थक भाषा समझना आरम्भ कर देता है। वह 10 से 14 महीनों तक प्रथम शब्द आरम्भ कर देता है। तीन वर्ष तक, व्याकरण और वाक्य-रचना विकसित हो जाती है। इस अवस्था में प्रारम्भिक सामाजिक आधार महत्वपूर्ण होते हैं। क्योंकि शिशु सामाजिक स्थितियों में जिस प्रकार का व्यवहार प्रदर्शित करता है, वह उसके निजी और सामाजिक समायोजन को प्रभावित करता है। यह अवस्था निम्न अनुक्रम में शिशु की स्व-अवधारणा का भी विकास करती है-

(1) शारीरिक स्व-मान्यता और स्व-जागरूकता

(2) आत्म-विवरण और स्व-मूल्यांकन, एवं,

(3) गलत कार्य करने के प्रति संवेगात्मक प्रतिक्रिया।

3. प्रारम्भिक बाल्यावस्था (Pre Childhood)

प्रारम्भिक बाल्यावस्था 3 से 6 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है, जैसे- खिलौना आयु, विद्यालय पूर्व अवस्था, कष्टप्रद अवस्था अथवा टोलीपूर्व आयु प्रारम्भिक बाल्यावस्था में शारीरिक विकास मंद गति से होता है तथा शरीर-क्रियात्मक आदतें जो बचपनावस्था में प्रारम्भ हुई थीं, वे इस अवस्था में स्थायी हो जाती हैं। यह अवधि कौशल प्राप्त करने वाली अवधि होती है क्योंकि बालक आसानी से दोहराता है और कौशल सीखता है। इस अवस्था में भाषा एवं बोध का विकास होने लगता है। संवेगात्मक विकास वृद्धि, लिंग, पारिवारिक पृष्ठभूमि और बालक के पालन-पोषण के अनुसार होता है। खेल बालक के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं खेल बालक द्वारा अर्जित किए गए कौशलों, अन्य समूह साथियों के मध्य उनकी लोकप्रियता तथा उनके परिवारों को सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति के द्वारा प्रभावित होता है। अभिभावक, साथी और विभिन्न पारिवारिक सम्बन्ध बालक की समाजीकरण प्रक्रिया में तथा स्वअवधारणा विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं। अभिभावक शिक्षण के तरीकों, अनुशासन, आत्म-नियन्त्रण तथा स्वीकार्य व्यवहार के द्वारा बालकों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

(4) उत्तर बाल्यावस्था (Middle or Late Childhood)

उत्तर बाल्यावस्था 6 वर्ष से 12 वर्ष तक की अवस्था होती है। यह अवधि उस अवधि से पूर्व होती है जब बालक यौनरूप से परिपक्व होता है। इस अवधि में बालक की शारीरिक वृद्धि अपेक्षाकृत समान गति से होती है तथा पोषण, स्वास्थ्य, प्रतिरक्षीकरण, काम वासना और बुद्धि से प्रभावित होती है। उत्तर बाल्यावस्था में विकसित हुए कौशलों को 4 वर्गों-स्व-सहायता कौशलों, सामाजिक-सहायता कौशलों, विद्यालय कौशलों और खेल कौशलों में बाँटा जा सकता है। वाक् शक्ति (शब्द) उच्चारण, शब्दावली, वाक्य संरचना के सभी क्षेत्रों में तीव्रता से सुधार आता है। बड़े बालक अपने संवेगों के अभिव्यक्ति के शांति का प्रयोग करना सीखते हैं। बड़े बालक अपने मित्रों के साथ क्रियाकलापों में रुचि नियन्त्रित करने तथा सामाजिक दबावों से उत्पन्न संवेगों को दूर करने के लिए संवेगात्मक रखना चाहते हैं। ये बालक बड़ों के मानदंडों को प्रायः अस्वीकार करते हैं और विपरीत लिंग के प्रति विरोध पूर्ण दृष्टिकोण विकसित करते हैं। बुद्धि और अधिगम अवसरों के परिणाम स्वरूप अवधारणाओं की तीव्रता से जानकारी होती है। इस अवधि में बालक जिन नैतिक संहिताओं का विकास करते हैं वे संबंधित समूहों साथ मजबूत सम्बन्ध होता है।

अगले भाग में हम किशोरावस्था में युवावस्था आदि की चर्चा करेंगे।